दुनिया के सबसे बड़े आतंकवादी अमेरिका के काले कारनामे

• सुरेन्द्र कुमार

आतंकवाद के खिलाफ "अंतिम युद्ध" छेड़ने और "इंसाफ" करने के दावे कर रहा अमेरिका खुद विश्व इतिहास का सबसे बड़ा आतंकवादी है जिसके जघन्य अपराधों की फेहरिस्त इतनी लम्बी है कि उसे यहां गिनाना असम्भव है। आज जिस ओसामा बिन लादेन को अमेरिका और उसके तलुवे चाटने वाले भारतीय मीडिया ने वर्ल्ड ट्रेड सेंटर और पेंटागन पर हमलों का दोषी करार देकर उसके एवज में हजारों बेगुनाहों को सजा देने की कार्रवाई शुरू कर दी है, उसे पैदा किसने किया? दुनिया की सबसे संगठित आतंकवादी संस्था सीआईए ने ही तो उसे पाला-पोसा और अफगानिस्तान में कम्युनिज्म के हौवे से लड़ने के नाम पर वह सब कुछ दिया जिसने अन्ततः ओसामा को भस्मासुर बना डाला।

11 सितम्बर को जब आतंकवाद के पालनहारों और मौत के सौदागरों को 1812 के बाद से पहली बार अपनी ही धरती पर अपनी सैन्य शक्ति और वित्तीय बाहुबल के प्रतीकों को ध्वस्त होते देखना पड़ा तो सामने मुंह बाए खड़ी भयावह आर्थिक मंदी के बीच अपने सारे पिछले पापों पर पर्दा डालने के लिये पूरे अमरीकी प्रचारतंत्र की तोपों का मुंह ओसामा की ओर मोड़ दिया गया। पूरा प्रयास यह रहा कि इस सारे कर्णभेदी कोलाहल के बीच नवउपनिवेशवाद के बीते दिनों के घिनौने इतिहास और आने वाले कल की महाशक्तिवादी रणनीति की ओर से सबका ध्यान हटा दिया जाये। इस बीच मीडिया हजारों लोगों की लोमहर्षक मृत्यु तक को बेचने में लगा रहा।

सारी दुनिया को अपने बूटों के तले रखने वाले अमरीका के घर में घुसकर आतंकवादियों ने उसकी नाक तोड़ दी, इसलिये अमरीका का बौराये जानवर की तरह शोर मचाना स्वाभाविक है। और जब बॉस की नाक लाल हो गयी हो तो जाहिर है कि भारतीय शासक वर्ग जैसे उसके लग्गू-भग्गू भी उछलकूद मचायेंगे ही और जमीन पर लाठियां पटकेंगे ही। और उनका भोंपू--पूरा का पूरा मीडिया गला फाड़-फाड़कर बुश और पावेल और रम्सफेल्ड और ब्लेयर की आवाज में चिल्लायेगा ही।

लेकिन आइये हम जरा सिर्फ पिछले 50 बरस में अमरीकी आतंकवाद की चंद कारगुजारियां को याद कर लें।

वर्ल्ड ट्रेड सेण्टर पर हमले के ठीक 28 साल पहले 11 सितम्बर के ही दिन चिली में सीआईए की सक्रिय मदद से साल्वादोर अलेन्दे की लोकप्रिय सरकार का तख्ता पलटने के बाद जरनल पिनोशे द्वारा कराये कत्लेआम में 50,000 हजार लोग मारे गये थे। 1967 में इण्डोनेशिया में अमरीका की शह पर 50 लाख लोग मौत के घाट उतार दिये गये क्योंकि वे कम्युनिस्ट थे या उनके साथ सहानुभूति रखते थे। पिछले 10 वर्षों में इराक में अमरीकी प्रतिबन्धों के कारण 5 लाख छोटे बच्चे मर चुके हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से ही अमरीका किसी न किसी देश पर हमले और बमबारी लगातार करता रहा है और पश्चिम एशिया के देशों में तो 1983 के बाद से उसकी बमबारी का सिलसिला रुका ही नहीं है। इससे पहले कोरिया और वियतनाम पर थोपे गये युद्धों में 40 लाख लोग मारे गये थे। युद्ध की घोषणा किये बिना अमरीकी युद्धपोत और विमान लगातार लेबनान, लीबिया, इराक, ईरान, सूडान और अफगानिस्तान पर हमले करते रहे हैं। इन हमलों में कितने निर्दोष नागरिक मारे गये इसकी न तो अमरीका को जानकारी है और न ही फिक्र। निकारागुआ, अल सल्वाडोर, क्यूबा, ग्रेनाडा, ग्वाटेमाला, पनामा जैसे देशों में अमरीका ने न जाने कितने जनसंहार कराये हैं। आज भी कोलम्बिया में युद्ध जैसी स्थिति बनी हुई है जहां अमरीका गांव-गांव तक में बमबारी करने के लिये अरबों डालर खर्च कर रहा है। पेरू में जारी जनयुद्ध को कुचलने के लिये अमरीका ने वहां हजारों ग्रीन बेरेट्स सैनिक उतारे हैं।

बेशर्म, वहशी हत्यारा

अमेरिका ने दुनिया के न जाने कितने देशों में वहां के लोकप्रिय नेताओं की हत्याएं कराई हैं और उसकी दर्जनों असफल कोशिशों का भांडा फूट चुका है।

अप्रैल 1955 में तत्कालीन चीनी प्रधानमंत्री चाउ एन-लाई ने बांदुंग रवाना होते समय अचानक अपना कार्यक्रम बदल दिया और किसी कारणवश एअर इंडिया के विमान के बजाय दूसरा विमान पकड़ा। एअर इंडिया के विमान में रखा बम नियत समय पर फट गया, अनेक बेकसूर लोग मारे गये पर चाउ एन-लाई बच गये। सीआईए का मिशन विफल रहा, हालांकि बाद में लीपापोती करने के प्रयास में उसने दावा किया कि हांगकांग में उसके एजेंट को पहले ही इस "योजना" पर अमल करने से रोकने के आदेश दे दिये गये थे, इसलिये एअर इंडिया के विमान के विध्वंस में उसका हाथ नहीं था। पर हत्यारों का चेहरा बेनकाब हो चुका था। (देखें, फाइनल रिपोर्ट, भाग IV, पृ. 108, अमेरिका की आधिकारिक जांच समिति के पर्यवेक्षण के अंश)

आगे चलें।

क्यूबा में फिदेल कास्त्रो के नेतृत्व में जनक्रान्ति सफल होते ही अमेरिका ने उनकी हत्या का फैसला कर लिया था। सीआईए के तत्कालीन डायरेक्टर एलन डलेस ने एक आदेश पर हस्ताक्षर किये थे जिसमें लिखा था : "फिदेल कास्त्रो को ठिकाने लगाने पर पूरा ध्यान दिया जाये।... यकीन है कि कास्त्रो के दृश्यपटल से गायब हो जाने से क्यूबा की मौजूदा सरकार के पतन की प्रक्रिया बहुत तेज हो जायेगी।...." (एलेन्ड एसेशिनेशन प्लॉट्स अगेन्स्ट फारेन लीडर्स (विदेशी नेताओं को कत्ल कराने की कथित साजिशें), चर्च कमेटी, अमेरिकी संसद की रिपोर्ट, पृ. 11) खुद अमेरिकी पत्रकारों और सीआईए के भूतपूर्व कर्मियों के अनुसार अमेरिका ने कास्त्रो को खत्म करने के लिए दो दर्जन से ज्यादा कोशिशें की हैं जिनमें माफिया तक का इस्तेमाल किया गया है।

कुछ समय बाद स्वतंत्र कांगो के पहले लोकप्रिय नेता पैट्रिस लुमुम्बा को सीआईए के जारज पुत्र मोबुटु ने वहशीपन के साथ कत्ल करा दिया। इस शर्मनाक काण्ड में पर्दे के पीछे अमरीकी

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अमेरिकी बमबारी के शिकार देश

चीन	1945-46	कम्बोडिया	1969-70
कोरिया	1950-53	ग्वाटेमाला	1967-69
चीन	1950-53	ग्रेनाडा	1983
ग्वाटेमाला	1954	लीबिया	1986
इण्डोनेशिया	1958	अल सल्वाडोर	1980 का दशक
क्यूबा	1959-60	निकारागुआ	1980 का दशक
ग्वाटेमाला	1960	पनामा	1989
कांगो	1964	इराक	1991-01
पेरू	1965	सूडान	1998
लाओस	1964-73	अफगानिस्तान	1998
वियतनाम	1961-73	युगोस्लाविया	1999

राष्ट्रपति ड्वाइट आइजनहोवर, सीआईए के कुख्यात डायरेक्टर एलेन डलेस, ओ' डोनेल, रिचर्ड बिसेल, बिल हार्वे आदि शामिल थे।

80 के दशक में लीबिया के नेता मुअम्मर गद्दाफी का तख्ता पलटने और उनकी हत्या के कई असफल प्रयासों के बाद 14 अप्रैल 1986 को अमरीका के दर्जनों एफ 111 बमवर्षकों ने सोये हुये त्रिपोली शहर पर घुआंधार बमवर्षा की। निशाना थे गद्दाफी जो उस समय रेगिस्तान में एक तम्बू में सो रहे थे। वह तो बच गये लेकिन उनकी गोद ली हुई पन्द्रह महीने की बच्ची मारी गयी।

उपरोक्त प्रकरण अमरीकी आतंकवादियों द्वारा आयोजित अनगिनत व्यक्तिगत हत्यायों से जुड़े हैं परन्तु उन सामूहिक, व्यापक पैमाने पर किये गये नरसंहारों के बारे में क्या कहा जाये जो संयुक्त राज्य अमरीका पिछले सौ सालों से आयोजित करता आया है। इसका एक ज्वलंत उदाहरण 1890 के दशक का एक घिनौना नाटक है। प्रसिद्ध अंग्रेज पत्रकार पॉल हॉक की पुस्तक "द न्यूजपेपर गेम" के अनुसार 1890 के दशक में अमरीकी पूंजीवाद इजारेदारी की मंजिल में प्रवेश कर चुका था और विदेशी मंडियों और कच्चे माल की तलाश में नये इलाकों को तलाश रहा था तो उसके अखबारों की नजर क्यूबा पर टिक गयी। अखबारमालिकों के शिरोमणि विलियम रैन्डोल्फ हर्स्ट ने क्यूबा पर आक्रमण के बहाने की तलाश के लिये अपने वरिष्ठ संवाददाता को हवाना भेजा। रेमिंगटन ने हवाना से मालिक को तार भेजा 'पूरा अमन है यहां। कोई गड़बड़ नहीं। कोई युद्ध नहीं होने जा रहा। मैं लौट रहा हूं।' हर्स्ट ने झल्लाकर रेमिंगटन को संदेश भेजा : 'वहीं रुके रहो, तुम तस्वीरें मुहैया करो, युद्ध मैं मुहैया करूंगा।'

कुछ ही समय बाद अमरीकी जलयान 'माइन' में विस्फोट हुआ और हर्स्ट के अखबार *न्यूयार्क जर्नल* को वांछित बहाना मिल गया। अमरीकी अखबारों में होड़ लग गयी देश को युद्ध के मैदान में झोंकने की। और इसके बाद 30 वर्षों तक क्यूबा ही नहीं पूरे कैरिबियन सागर क्षेत्र में अमरीकी सैनिक छा गये।

दूसरों की जमीन पर सैनिक उतारने के नये-नये नुस्खे ईजाद करने के सिलसिले की यह शुरुआत थी।

> "दुनिया के सामने हमने अपनी तस्वीर एक ऐसे गुण्डे के रूप में पेश की है जो एक बटन दबाता है और हजारों लोग मौत की नींद सो जाते हैं। हम एक मिसाइल के खर्च के अलावा कोई कीमत नहीं चुकाते. ..आने वाले वर्षों में बाकी दुनिया के साथ हमारे सम्बन्धों में यह तस्वीर हमारा पीछा करती रहेगी।"
>
> —लारेंस ईगलबर्गर,
> भूतपूर्व अमरीकी विदेश मंत्री

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद सीआईए ने एशिया, अफ्रीका और लातिनी अमरीका के देशों में दर्जनों तख्तापलट और हत्याकाण्ड आयोजित कराये। ईरान में राजशाही को हटाकर सत्ता में आये डाक्टर मुसद्दक की लोकप्रिय सरकार ने अमरीकी तेल कम्पनियों का राष्ट्रीकरण करना शुरू किया तो उनकी बर्बरतापूर्वक हत्या कराकर शाह की जालिम सत्ता को दुबारा बैठाया गया। 1973 में चिली में सल्वाडोर अलेन्दे की पार्टी भारी बहुमत के साथ सत्ता में आयी और जैसे ही उसने कई समाजवादी कदम उठाने शुरू किये, अमरीका ने वहां तख्तापलट करा दिया जिसमें खुद अलेन्दे लड़ते हुये मारे गये। इस साजिश में सीआईए का भरपूर साथ पेप्सी कम्पनी ने दिया जिसकी भारी पूंजी वहां लगी हुई थी। निकारागुआ में तानाशाह सोमोजा को हटाकर बनी लोकप्रिय सरकार के खिलाफ बर्बर आतंकवादी हमले जारी रखने के लिये अमरीका बरसों तक कोण्ट्रा आतंकवादियों को अरबों डालर की मदद और हथियार देता रहा।

वियतनाम में अमरीकी फौजों ने जैसे बर्बर कत्लेआम किये उसकी मिसाल मिलना मुश्किल है। 1961 से 1973 तक अमरीकी विमानों ने पूरे हिन्दचीन—वियतनाम, कम्पूचिया, लाओस—को बमों से पाट दिया। इस कारपेट बॉम्बिंग (बमों का कालीन बिछा देने) से शहर, खेत, पहाड़, जंगल किसी को नहीं छोड़ा गया। 30 वर्ष बाद आज भी आये दिन खेत में हल चला रहा कोई किसान या पार्क में खेल रहा कोई बच्चा इन बमों का शिकार होता रहता है।

तीसरी दुनिया के ज्यादातर देशों में अमरीका एक घृणित हमलावर के तौर पर देखा जाता है। जिससे बच्चा-बच्चा नफरत करता है। बहुत पहले अमरीकी इतिहासकार विलियम मैन्सफील्ड ने अपने देश के एक पादरी रेनविक सी केनेडी का हवाला देते हुये कहा था : "वह खंड़ा है अमरीकी आधिपत्यवादी सेना का एक नमूना सिपाही—मोटा, जरूरत से ज्यादा खाया-पिया, अलग-थलग, उदास, नजर कम, समझदारी उससे भी कम, विजेता, जिसकी एक जेब में चाकलेट और दूसरी जेब में सिगरेट का पैकट है—विजित को देने के लिये उसके पास बस यही है।"

शायद इसी कारण कोरिया युद्ध में हारकर लौटे अमरीका के "नेपोलियन बोनापार्ट" जनरल डगलस मैकार्थर्क ने 1960 के दशक के आरम्भ में तत्कालीन राष्ट्रपति जॉन एफ केनेडी से कहा था : "जो कोई भी अमरीकी सेना को एशिया में उतारना चाहता है, उसे अपने दिमाग की जांच करा लेनी चाहिए।" लेकिन ऐसी चेतावनियों को ताकत के नशे में चूर साम्राज्यवादी बार-बार नजरंदाज करते रहे हैं और बार-बार मुंहकी खाते रहे हैं। जॉर्ज बुश वैसे भी खुद अमरीकी नजरों में अर्द्ध शिक्षित हैं, वे तो इस पर ध्यान नहीं ही देंगे। राष्ट्रपति चुनाव में हुई धांधली की कालिख धोने और दुनिया को अमरीका की ताकत का लोहा मनवाने के लिये वह आतुर हैं...।

व्यक्तिगत आतंकवाद और राजकीय आतंकवाद एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। पूंजी रूपी डाइन अग्नि नृत्य के लिये अपने पात्र तैयार करती है दूसरों को मारने के लिये। और कभी-कभी वे पात्र उल्टे मार कर बैठते हैं।

(लेखक कई अखबारों से जुड़े रहे वरिष्ठ पत्रकार और लेखक हैं)